एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-13

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -12 का शेष (नाटक का मूल पाठ)...]

पद्मावती : यह मेरा कर्त्तव्य है कि तुमको अभिशापों से बचाऊँ और अच्छी बातें सिखाऊँ। जा रे लुब्धक, जा, चला जा। कुमार जब मृगया खेलने जायँ, तो उनकी सेवा करना। निरीह जीवों

Scanned by CamScanner

को पकड़कर निर्दयता सिखाने में सहायक न होना।

अजातशत्रु : यह तुम्हारी बढ़ाबढ़ी मैं सहन नहीं कर सकता।

पद्मावती : मानवी सृष्टि करुणा के लिए है, यों तो क्रूरता के निदर्शन हिंस्र पशुजगत् में क्या कम हैं?

समुद्रदत्त : देवि! करुणा और स्नेह के लिए तो स्त्रियाँ जगत् में हुई हैं, किन्तु पुरुष भी क्या वही हो जाएँ?

Scanned by CamScanner

पद्मावती : चुप रहो, समुद्र! क्या क्रूरता ही पुरुषार्थ का परिचय है? ऐसी चाटूक्तियाँ भावी शासक को अच्छा नहीं बनातीं।

छलना का प्रवेश।

छलना : पद्मावती! यह तुम्हारा अविचार है। कुणीक का हृदय छोटी-छोटी बातों में तोड़ देना, उसे डरा देना, उसकी मानसिक उन्नति में बाधा देना है।

Scanned by CamScanner

पद्मावती : माँ! यह क्या कह रही हो! कुणीक मेरा भाई है, मेरे सुखों की आशा है, मैं उसे कर्त्तव्य क्यों न बताऊँ? क्या उसे चाटुकारों की चाल में फँसते देखूँ और कुछ न कहूँ!

छलना : तो क्या तुम उसे बोदा और डरपोक बनाना चाहती हो? क्या निर्बल हाथों से भी कोई राजदण्ड ग्रहण कर सकता है?

पद्मावती : माँ! क्या कठोर और क्रूर हाथों से ही राज्य सुशासित होता है? ऐसा विष-वृक्ष लगाना क्या ठीक होगा? अभी कुणीक किशोर है, यही समय सुशिक्षा का है। बच्चों का हृदय कोमल

Scanned by CamScanner

थाला है, चाहे इसमें कँटीली झाड़ी लगा दो, चाहे फूलों के पौधे।

अजातशत्रु : फिर तुमने मेरी आज्ञा क्यों भंग होने दी? क्या दूसरे अनुचर इसी प्रकार मेरी आज्ञा का तिरस्कार करने का साहस न करेंगे?

छलना : यह कैसी बात?

(शेष भाग-14 में)

Scanned by CamScanner